

Он умер, чтобы я мог жить
СТРЕМЛЕНИЯ—К ХРИСТУ КАК ЖИЗНИ

R514

1. $A\flat$ $E\flat/B\flat$ $A\flat/C$ $A\flat$ $D\flat$ $A\flat/C$ $E\flat$ $E\flat/G$

4 $A\flat$ $A\flat^7$ $D\flat$ F/C $B\flat m$ $E\flat$ $E\flat/G$ $A\flat$ $E\flat/D\flat$ $A\flat/C$ $B\flat m$ $E\flat^7$

$A\flat$ $D\flat/A\flat$ $A\flat$ $E\flat$ $E\flat/G$ $A\flat$ $A\flat/C$ $E\flat/B\flat$ $B\flat^7$

8 **Chorus**

$E\flat$ $E\flat^7/G$ $A\flat$ $A\flat^7$ $D\flat$ $B\flat m$ $A\flat/E\flat$ $E\flat^7$ $A\flat$ $D\flat/A\flat$ $A\flat$

12

2. Он умер – мёртв я для себя,
Греха и Сатаны.
О смерти глубь! О жизни высь!
Войти я жажду в них.
3. Живёт Он, чтобы я мог жить,
Как Он, и свят, и чист.
Своей природой наделив,
Во мне, Господь, живи.
4. Живёт Он, чтоб Его любовь
Страждущим я открыл
И, по Его стопам идя,
Как Он, для них я жил.